International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal
www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

''सामन्तीय शोषण और होरी की मृत्यु''

डॉ.नागरगोजे ए.बी.

एच.पी.टी.आर.वाय.के.

महाविद्यालय, नाशिक—५.

प्रस्तावना:—होरी की मृत्यु क्या अचानक हुई? या वह औपन्यासिक संरचना में पूर्व नियोजित थी? सामान्यत: ऐसा लगता है कि प्रेमचंद ने अंत—अंत में गोदान का अंत करने के लिए होरी की मृत्यु का दृश्य उपस्थित किया। परन्तु उपन्यास की संरचना के तन्तुओं को ध्यान से देखा जाए तो ऐसा लगता है, कि प्रेमचन्द ने होरी का चरित्र मृत्यु में समाप्त करने के लिए ही सृजित किया था। प्रेमचन्द ने ''होरी'' को खड़ा ही मारने के लिए किया था। गोदान के प्रारम्भ में ही प्रेमचन्द ने होरी से कहलवाया था कि ''जिस पैर के नीचे गर्दन दबी हो, उसे सहलाना ही श्रेयस्कर है'' होरी के इस कथन में ही उसकी मृत्यु का संकेत है। इसके अलावा जब धनिया कहती है कि तुम जैसे मर्द साठे पर पाठे तो नहीं होते हैं ''उसके जबाब में होरी कहता है कि साठे की नौबत न आयेगी धनिया उसके पहले ही चल देंगे।'' यह दो संकेत प्रेमचंद प्रारंभ में ही देते हैं, जिनसे उपन्यास का अन्त स्पष्ट हो जाता है— होरी साठ के बहुत पहले ही चल देता है— प्रेमचंद अपनी प्रारंभिक घोषणा का अन्त उपन्यास के समापन के साथ कर देते हैं अर्थात, उपन्यास की संरचना 'होरी' के क्रमश: मरते जाने की प्रक्रिया के तन्तुओं से बुनी गई है।

''सामन्तीय शोषण के अनेकश: रूपों, जिसे रायसाहब के 'पैर' से सम्बोधित किया गया है, को होरी अपनी गर्दन पर प्रारंभ से ही महसूस करता है, वह यह भी जानता है, कि शोषण का यह जुआ

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal
www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

जो उसकी गर्दन पर है, वह हटाया नहीं जा सकता उससे मुक्ति सम्भव नहीं है, उसे सिर्फ सहलाकर ही जिन्दा रहा जा सकता है। वह अपनी तमाम उम्र उसे सहलाता है, परन्तु नियति बनी व्यवस्था का दबाव इतना बढ़ता है, कि होरी 'किसान की समस्त मरजाद' को निभाता हुआ और छोटी से छोटी आकांक्षाओं के साथ मजदूर बनकर उस सड़क पर मृत्यु को प्राप्त होता है, जो शहर की ओर जाती है, अर्थात जिस पर चलकर गोबर शहर गया था। नियति का चक्र यह है कि गोबर शहर में कारखानों में मजदूर बनता है। होरी गांव में अपने ही खेत में मजदूरी करता है, वास्तव में होरी की मृत्यु उस समय हो जाती है, जब वह अपने ही खेत में मालिक से मजदूर बनता है। किसान का स्वाभिमान, उसकी मरजाद, उसकी पहचान उसकी अस्मिता उसका अपनी छोटी सी जमीन का मालिक होना ही होती है, जिस दिन वह मालिक से मजदूर बनता है, सही अर्थों में किसान की मृत्यु हो जाती है।

''गोदान कृषक जीवन का महाकाव्य है'' यह अब तक कहा गया—सुना गया। परन्तु होरी की मृत्यु के सन्दर्भों को विश्लेषित किया जाए तो गोदान महाकाव्य ही नहीं, गोदान एक श्रेष्ठ शोकगीत भी है। एक ऐलिजी है। ''निराला की 'सरोज स्मृति' हिन्दी की ही नहीं, दुनिया के साहित्य का श्रेष्ठ शोकगीत माना जाता है। गद्य में 'ट्रेजडी' की परम्परा है। ट्रेजडी में कृति का अन्त दु:खांत होता है। गोदान सिर्फ दु:खांत ही नहीं—वह होरी की मृत्यु का महाकाव्य है।

होरी कई बार मरता है। गोबर घर छोड़कर जाता है, तब होरी मरता है, उसकी गाय को उसका भाई जहर देकर मारता है, जब होरी मरता है, उसके भाई की बीबी बाँस बेचने में जो छल करती है, तब

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal
www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

होरी मरता है। उसका खेत गिरवी रखा जाता है, बैल गिरवी चला जाता है तब होरी मरता है—और भी कई अवसर है जब होरी मरता है।

भारतीय किसान, होरी जिसको प्रतीक है, के बारे में कहा जाता है कि वह ऋण में जन्मता और ऋण में भर जाता है। होरी की मजदूर के रूप में मौत कोई स्वाभाविक मृत्यु नहीं है— वास्तव में तो यह मृत्यु नहीं, हत्या है। कौन है इस हत्या का जिम्मेदार? सह मृत्यु हमें झकझोरती नहीं है। चौकाती नहीं और न उद्वेलित करती, हम स्तब्ध नहीं होते, परन्तु गोदान में होरी की मृत्यु पाठक को अन्दर से झकझोर कर रख देती है। पाठक कुछ समय के लिए स्तब्ध हो जाता है, क्यों? इसलिए कि वह मरा नहीं मारा गया है। समाज, धर्म, सामंतीय अर्थव्यवस्था और इनके शोषण के पैर के नीचे उसकी गर्दन प्रारंभ से ही रखी थी—यह दबाव वह अपने जीवन में हमेशा महसूस करता है। दबाव निरंतर बढ़ता जाता है, वह यह भी महसूस करता है। गर्दन पर कसते हुए शिकंजे और रूकती हुई सांस अन्त में पूर्णत: रूक जाती हे। इसे आप मृत्यु कहेंगे या हत्या?

होरी की हत्या का उत्तरदायित्व है, सामंतीय और पूंजीवादी व्यवस्था के उस रूप पर, जो साम्राज्यवादी व्यवस्था के अन्तर्गत नए रूपों और औजारों को लेकर आया था। पूंजीवादी व्यवस्था की अनिवार्य परिणति होती है अजनबियत। मनुष्य—मनुष्य के रिश्तों के बीच अपरिहार्य अजनबियत को जन्म दिया जाता है। अकेले होते जाने की कसक होरी को मृत्यु के मुहाने तक पहुंचाती है। पहले भाई अलग होता है, बेटा घर छोड़ देता है और गाय भी चली जाती है। परिवार को तोड़ना पूंजीवाद की अनिवार्यता है—परम्परागत किसान जो मरजाद

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal
www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

से रहना मोटा—झोटा पहनने और खाने में भी संतुष्ट रहना चाहता है, परन्तु रह नहीं पाता और उसकी परिणति उसकी मृत्यु में होती है।

होरी की मृत्यु के निहितार्थ क्या है—? प्रेमचन्द ने क्यों होरी के क्रमश: मरते जाने का ताना—बाना बुना? होरी एक परम्परागत मरजाद वाला सीधा—साधा किसान है, सीधा—साधा इस अर्थ में कि वह छल और छद्म को नहीं जानता। वह विद्रोह भी नहीं करता और गोबर से कहता है कि मेरे मरने के बाद तुम जो चाहो सो करना। वह नई बदली हुई व्यवस्था, सामंतवाद और पूंजीवाद के षड़यंत्र को और सांठ—गांठ को नहीं समझता उसके शोषण के हथकण्डों को नहीं समझता और गोबर जो इस सबको जानता है, और उसके खिलाफ विद्रोह करना चाहता है, उसका साथ भी नहीं देता। प्रेमचंद ने होरी की मृत्यु के माध्यम से यह दिखाया है कि जब तक किसान इस नई व्यवस्था की सांठ—गांठ और षड्यंत्रों को नहीं समझेगा और नई विद्रोही विचारधारा का साथ नहीं देगा—उसकी नियति मजदूर बनकर सड़क पर मरना ही होगी।

होरी की मृत्यु—परम्परागत जीवन, विचारधारा की मृत्यु भी है, और नई विचारधारा का उदय भी है। गोदान का नायक होरी, व्यक्तिगत रूप से साहसी, ईमानदार और कर्मठ नायक है। वह भाग्यवादी नहीं है, वह कभी दु:खों को पूर्व जन्म के कृत पापों का फल नहीं मानता और न ईश्वर के पास अपने दु:ख दूर करने की याचना लेकर जाता है। यह प्रेमचंद की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। होरी की मृत्यु उपन्यासों से एक चरित्रवान नायक की मृत्यु भी है। इसके बाद के उपन्यासों के नायक क्रमश: अन्तर्मुखी और निर्वीय, नपुंसक होते गए हैं। उनमें साहस और विवेक का ह्रास होता गया है

शेखर एक जीवन का शेखर इसी श्रेणी का प्रतिनिधी नायक है। प्रेमचन्द इस बात को समझ गए थे कि अब जो परिस्थितियां बन रही है उनमें होरी जैसे नायक न तो पैदा होंगे और न उनकी आवश्यकता है। तत्कालीन राजनीति में भी अवसरवाद और स्वार्थी वृत्तियां उजागर होने लगी थीं। राजनैतिक परिदृश्य से गांधी जी के नायकत्व का आभामंडल टूटने लगा था। उनके नेतृत्व को चुनौती दी जाने लगी थी। गांधी जी स्वयं यह महसूस करने लगे थे कि सत्य और अहिंसा का रास्ता सब ठीक नहीं है। १९४२ के आन्दोलन में करो या मरो का नारा गांधी दर्शन की परिवर्तन की दिशा का सूचक है। प्रेमचन्द ने भी परिवर्तन की इस दिशा को समझ लिया था और होरी जैसे चरित्रवान नायक की मृत्यु के माध्यम से इस परिवर्तन को संकेतित किया था।

इस दौर के विश्व के अधिकांश उपन्यासों के नायक आत्मरति में लीन, नपुंसक और साहसहीन हो रहे थे। यह स्थिति विश्व राजनीति और अर्थव्यवस्था के कारण निर्मित हो रही थी। भारत में भी 'नायक' हीन क्रांति का दौर प्रारंभ होने वाला था १९४२ का आंदोलन नायक विहीन था। होरी जैसे नायक की मृत्यु इस संदर्भ को भी स्पष्ट करती है।

रघुवीर वीरसहाय की कविता ''रामदास की हत्या'' और ''होरी की मृत्यु'' एक ही श्रृंखला की कड़ियाँ है। होरी ही रामदास बनकर चौराहे पर खड़ा है। पहले से तय है कि कल इस समय, एक निश्चित जगह पर उसकी हत्या होगी। यह तय भी है, और सबको पता भी है। लोक निश्चित दिन, समय और स्थान पर इंतजार कर रहे होते है—हत्यारा आता है और १२ इंच के चाकू से रामदास (होरी) की हत्या कर देता है—हम सब यह कहते हुए देखते रहते है कि देखो तय

था हत्या होगी—और अपने—अपने घर चले जाते हैं। कौन है रामदास का हत्यारा—चाकू मारने वाला या हम सब, पूरा समाज (समूह)? जो चुप—चाप देखता रहता है, वह मृत समाज जिसमें न विरोध कर साहस है और न लड़ने की हिम्मत पर रघुवीर सहाय का रामदास और होरी के मरने की परिस्थितियों में कोई आन्तरिक फर्क नहीं है। ऊपरी परिवेश बदला हुआ है, परन्तु साहस और विवेकहीन समाज वही है जो प्रेमचंद के गोदान में है।

गोदान में एक होरी ही ऐसा पात्र है (गोबर को छोड़कर) जिसमें लड़ने की हिम्मत अन्याय का विरोध करने का साहस और अन्याय होने वाले के पक्ष में स्वयं को खड़ा करने का विवेक था। प्रेमचन्द देख रहे थे कि समाज में इस तरह के नैतिक साहस और चरित्र वाला व्यक्ति मिलना मुश्किल है, इसलिए उन्होंने उसे अन्तिम परिणति तक पहुंचाना ही श्रेयस्कर समझा।

प्रेमचन्द होरी की मृत्यु सहज स्थितियों में चित्रित नहीं करते। वे उसकी मृत्यु का दायित्व इस पूरी व्यवस्था पर डालत हैं। जिसके बीच होरी जिंदगी भर पिसता रहा। कबीर की चक्की के दो पाट प्रेमचन्द के समय भी चल रहे थे। जिनमें से सही सलामत कोई नहीं बचता।

पूरे उपन्यास में मुख्य दो ही पात्र मरते हैं—होरी और उसकी महत्वाकांक्षा का प्रतीक ''गाय'' अर्थात् ''गोदान'' की इच्छा। उपन्यास के मध्य में प्रेमचन्द गायक की हत्या दिखाते हैं और उपन्यास का अन्त 'गोदान' की महत्वाकांक्षा पालने वाले किसान की हत्या से करते हैं। इस संरचनात्मक अन्तर्सम्बन्ध को समझना चाहिए और इसीलिए मैंने इस उपन्यास को ''शोकगीत'' कहा है।

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal
www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

निष्कर्ष:—

'सरोज' की मृत्यु पर निराला ने जो शोकगीत लिखा उसमें निराला सरोज के प्रति अपनी महत्वाकांक्षाओं के पूर्ण न कर पाने से आहत होते हैं और उनकी पीड़ा हाड़ फोड़ कर बाहूर फूट पड़ती है। क्या हमें गोदान पड़ते हुए होरी की महत्वाकांक्षाओं के पूरे न होने से उत्पन्न पीड़ा की आन्तरिक चीख सुनाई नहीं पड़ती? होरी का तिल—तिल कर मरना, दिखाई नहीं देता—शोषण के चक्र में पिसता हुआ होरी अन्ततः असमय ही अकाल मौत मरता है।

यह मौत—स्वाभाविक मृत्यु नहीं, यह एक सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक हत्या है—भारतीय समाज को इस हत्या के प्रति सचेत करना ही प्रेमचन्द का उद्देश्य है।

प्रस्तुत कर्ता

डॉ.नागरगोजे ए.बी.

एच.पी.टी.आर.वाय.के.

महाविद्यालय, नाशिक—५.